

DR. Sanjay Kumar, Assistant Prof YBN University, Hindi



# **YBN UNIVERSITY**

Established by the Act of Government of Jharkhand Act 15, 2017  
Gazette Notification No. 505, Dated 17th July 2017  
As per Section 2(f) of UGC Act. 1956



**RAJALATU, NAMKUM, RANCHI, JHARKHAND-834010**

# भूमिका

तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक अध्ययन की वह शाखा है, जिसमें विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और साहित्यिक परंपराओं के बीच समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य को व्यापक दृष्टिकोण से समझना और विभिन्न साहित्यिक कृतियों के बीच अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना होता है। तुलनात्मक साहित्य को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

## सांस्कृतिक समझ का विस्तार:

यह विभिन्न संस्कृतियों के साहित्यिक कृतियों की तुलना करके एक व्यापक सांस्कृतिक समझ प्रदान करता है। यह अध्ययन एक समाज के मूल्यों, विश्वासों और परंपराओं को दूसरे समाज के संदर्भ में समझने में मदद करता है।

## अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण:

यह वैश्विक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। यह विभिन्न देशों और भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करके साहित्यिक रचनाओं के वैश्विक संदर्भ को उजागर करता है, जिससे साहित्यिक विधाओं और शैलीगत प्रवृत्तियों के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को समझा जा सकता है।

### **साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन:**

यह विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों, आंदोलनों और शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। इससे यह पता चलता है कि कैसे एक साहित्यिक आंदोलन या शैली विभिन्न देशों में विकसित हुई और किस प्रकार से उन पर एक-दूसरे का प्रभाव पड़ा।

### **भाषाई विविधता का सम्मान:**

यह अध्ययन भाषाई विविधता का सम्मान करता है और विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। यह विभिन्न भाषाओं में निहित साहित्यिक सौंदर्य और अभिव्यक्ति के विविध रूपों को उजागर करता है।

### **मौलिकता और अनुकूलन का विश्लेषण:**

यह अध्ययन यह पता लगाने का प्रयास करता है कि कैसे एक साहित्यिक कृति या विचार को विभिन्न संस्कृतियों में मौलिकता के साथ अपनाया गया है और किस प्रकार से उसे अनुकूलित किया गया है। इससे साहित्यिक कृतियों के मूल और अनुकूलित रूपों के बीच संबंधों की समझ विकसित होती है।

### **मानवता की साझा विरासत:**

यह अध्ययन मानवता की साझा साहित्यिक विरासत पर जोर देता है। यह विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के साहित्यिक योगदानों को मान्यता देते हुए, उनके आपसी संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

यह साहित्यिक अध्ययन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक है। इसके माध्यम से साहित्य को राष्ट्रीय और भाषाई सीमाओं से परे जाकर एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण से समझा जाता है। जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

### **साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण:**

यह विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों, आंदोलनों और शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि कैसे एक साहित्यिक प्रवृत्ति या शैली विभिन्न संस्कृतियों में विकसित होती है और उन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

### **वैश्विक दृष्टिकोण:**

यह साहित्यिक कृतियों के वैश्विक संदर्भों को उजागर करता है, जिससे साहित्यिक रचनाओं के अंतरराष्ट्रीय प्रभावों को समझने में मदद मिलती है। यह अध्ययन विभिन्न साहित्यिक परंपराओं के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है।

### **साहित्यिक आलोचना और सिद्धांत:**

यह साहित्यिक आलोचना और सिद्धांत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है, जिससे नए सिद्धांतों और दृष्टिकोणों का विकास होता है। यह का अध्ययन साहित्य को एक संकीर्ण दृष्टिकोण से देखने की बजाय,

उसे एक व्यापक, वैश्विक और समग्र दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। इससे साहित्यिक अध्ययन में एक नई गहराई और व्यापकता आती है, जो साहित्य के विविध और जटिल स्वरूप को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करती है।

यह साहित्यिक अध्ययन और शोध में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन केवल साहित्यिक कृतियों की तुलना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और ऐतिहासिक संदर्भों को समझने का प्रयास किया जाता है। इसको विस्तृत रूप से निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

### **सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहन:**

यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है। यह अध्ययन विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से संबंधित साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण करता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ बढ़ती है।

## **साहित्यिक विकास का विश्लेषण:**

यह अध्ययन विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों, शैलियों और प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कैसे एक साहित्यिक प्रवृत्ति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में फैली और उसने विभिन्न साहित्यिक परंपराओं को प्रभावित किया।

## **भाषाई विविधता का अध्ययन:**

यह भाषाई विविधता का अध्ययन करता है और विभिन्न भाषाओं में लिखी गई साहित्यिक कृतियों के बीच समानताओं और भिन्नताओं को उजागर करता है। यह अध्ययन भाषाई और साहित्यिक अनुवाद के महत्व को भी रेखांकित करता है।

## **मौलिकता और प्रभाव का मूल्यांकन:**

यह अध्ययन करता है कि कैसे विभिन्न संस्कृतियों ने एक-दूसरे की साहित्यिक कृतियों को अपनाया और उन्हें अनुकूलित किया।

इससे साहित्यिक कृतियों की मौलिकता और उन पर पड़े प्रभावों का गहन मूल्यांकन संभव होता है।

### **अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक मानकों का विकास:**

यह विभिन्न देशों के साहित्यिक मानकों और मापदंडों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। इससे अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक मानकों के विकास और उनके प्रभाव को समझने में सहायता मिलती है।

### **समग्र दृष्टिकोण:**

यह अध्ययन में समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिसमें साहित्य के साथ-साथ इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और दर्शन जैसे अन्य विषयों का भी समावेश होता है। इससे साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण अधिक गहन और बहुआयामी बनता है।

### **साझा मानव अनुभव की पहचान:**

यह विभिन्न संस्कृतियों के साहित्य में साझा मानव अनुभवों और मूल्यों की पहचान करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भले ही हमारी भाषाएं और संस्कृतियाँ अलग-अलग हों, लेकिन मानव अनुभव और भावनाएं समान होती हैं।

### **नवीन साहित्यिक दृष्टिकोणों का विकास:**

यह नए साहित्यिक दृष्टिकोणों और सिद्धांतों के विकास में सहायक होता है। यह विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करके नए आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को जन्म देता है।

### **वैश्विक साहित्यिक चेतना:**

यह वैश्विक साहित्यिक चेतना का विकास करता है। यह अध्ययन साहित्य को एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है, जिससे साहित्य की समझ और सराहना एक व्यापक स्तर पर होती है।

इन सभी बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और

सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल साहित्यिक कृतियों की गहरी समझ प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के बीच आपसी समझ और संवाद को भी बढ़ावा देता है।

यह अध्ययन साहित्य को एक समग्र और वैश्विक दृष्टिकोण से समझने में मदद करता है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है:

### **भाषाई और साहित्यिक विविधता का सम्मान:**

यह विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन करता है। यह भाषाई और साहित्यिक विविधता का सम्मान करते हुए, विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक सौंदर्य और अभिव्यक्ति के विविध रूपों को उजागर करता है।

### **नवीन साहित्यिक दृष्टिकोणों का विकास:**

यह नए साहित्यिक दृष्टिकोणों और सिद्धांतों के विकास में सहायक होता है। यह विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करके नए आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को जन्म देता है।

## साहित्यिक आलोचना और सिद्धांत के विकास में योगदान:

यह साहित्यिक आलोचना और सिद्धांत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है, जिससे नए सिद्धांतों और दृष्टिकोणों का विकास होता है।

इसका अध्ययन साहित्य को केवल एक राष्ट्रीय या भाषाई सीमाओं में बांधकर देखने की बजाय, उसे एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। इससे साहित्यिक अध्ययन में एक नई गहराई और व्यापकता आती है, जो साहित्य के विविध और जटिल स्वरूप को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करती है।

यह साहित्यिक अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक है। यह साहित्य को राष्ट्रीय और भाषाई सीमाओं से परे जाकर एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण से समझने में मदद करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न साहित्यिक परंपराओं और रचनाओं के बीच के संबंधों का विश्लेषण और समझ है। यह अध्ययन साहित्यिक

कृतियों की तुलना के माध्यम से साहित्यिक विकास और साहित्यिक सिद्धांतों की विविधता को उजागर करता है। इसके माध्यम से साहित्यिक नवाचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तरीकों को भी समझा जा सकता है।

आशा है, तुलनात्मक साहित्य: एक अनुशीलन सुधि पाठकों को और शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा ।